हीरो जननु हारे, मूरख वेहु म मति रे,
मिली वठु महबूब सां, साझुरि संभारे,
कालु तुंहिंजे कंध ते, थो पलि पलि पुकारे,
मिटी कया मारे, सामी चए जंहिं सूरिमा.

सामी साहब कहते हैं, ''हे अज्ञानी मनुष्य! तुम अपना हीरे जैसा मूल्यवान जन्म व्यर्थ मत गँवाना। तुम शीघ्र ही संभल कर प्रियतम परमेश्वर से मिलने का जतन (यत्न) करो। अरे, काल (मृत्यु) तुम्हारे कंधे पर आ बैठा है, जो प्रति पल पुकार रहा है। हे मूर्ख! काल ने बड़े-बड़े वीरों को मारकर मिट्टी में मिला दिया है। भला तुम्हारी क्या हस्ती है?

मनुष्य-देह प्राप्त भाग्य का चिह्न माना जाता है। सभी जन्मों से मनुष्य-जन्म श्रेष्ठ है। भगवान के दर्शन, मोक्ष-मुक्ति इसी नर-देह द्वारा ही संभव है। बड़े-बड़े संत-महंत, ऋषि-मुनि, साधु, योगी, तत्त्वज्ञानी, भक्त आदि इसी नर-देह द्वारा अपने-अपने कार्य एवं उद्देश्य की पूर्ति कर सके हैं। अत: मनुष्य-जन्म हीरे जैसा अनमोल माना गया है। साधु संतों एवं शास्त्रों का कहना है कि इस जन्म में ईश्वर का नाम जप कर, भक्ति कर हीरे जैसा अपना जन्म सार्थक सफल करना चाहिए।

वस्तुत: जब से जीव (मनुष्य) भगवान से अलग हुआ है, तभी से उसने अपने शरीर को अपना घर मान लिया है। माया के वश होकर उसने अपने 'सच्चिदानंद' स्वरूप को भुला दिया है और इसी भ्रम के कारण उसे दारुण दु:ख भोगने पड़ रहे हैं। मूर्ख मनुष्य 'यह घर मेरा' 'यह धन मेरा' कहते हैं हुए 'मैं' पन के जाल में फँस गया है। वह कभी नहीं सोचता कि एक न एक दिन यह सब यहीं छोड़ कर मुझे ऊपर चले जाना है। काल/मृत्यु/यमराज किसी को नहीं छोड़ता। उसके चँगुल से कोई छूट नहीं पाया है।

इसलिए सामी साहब अज्ञानी जीव को तुरंत जाग जाने के लिए कहते हैं कि अभी भी समय है, परमेश्वर का भजन-स्मरण कर अपना जीवन सार्थक बनाने का प्रयत्न करो। पहले अपने अंदर बैठे हुए परमात्मा को पहचानो। परमार्थ या भक्ति उस आत्मस्वरूप तक पहुँचने का उत्तम मार्ग है। इस मार्ग से आगे बढ़ने पर तुम्हें परम सत्य की प्राप्ति हो सकती है। फलत: जन्म-मृत्यु के कुचक्र से तुम मुक्ति पा सकोगे।

काल फिरै ऊपरै, हाथों धरी कमान।
कहै कबीर गहु ज्ञान को, छोड़ सकल अभिमान॥

■